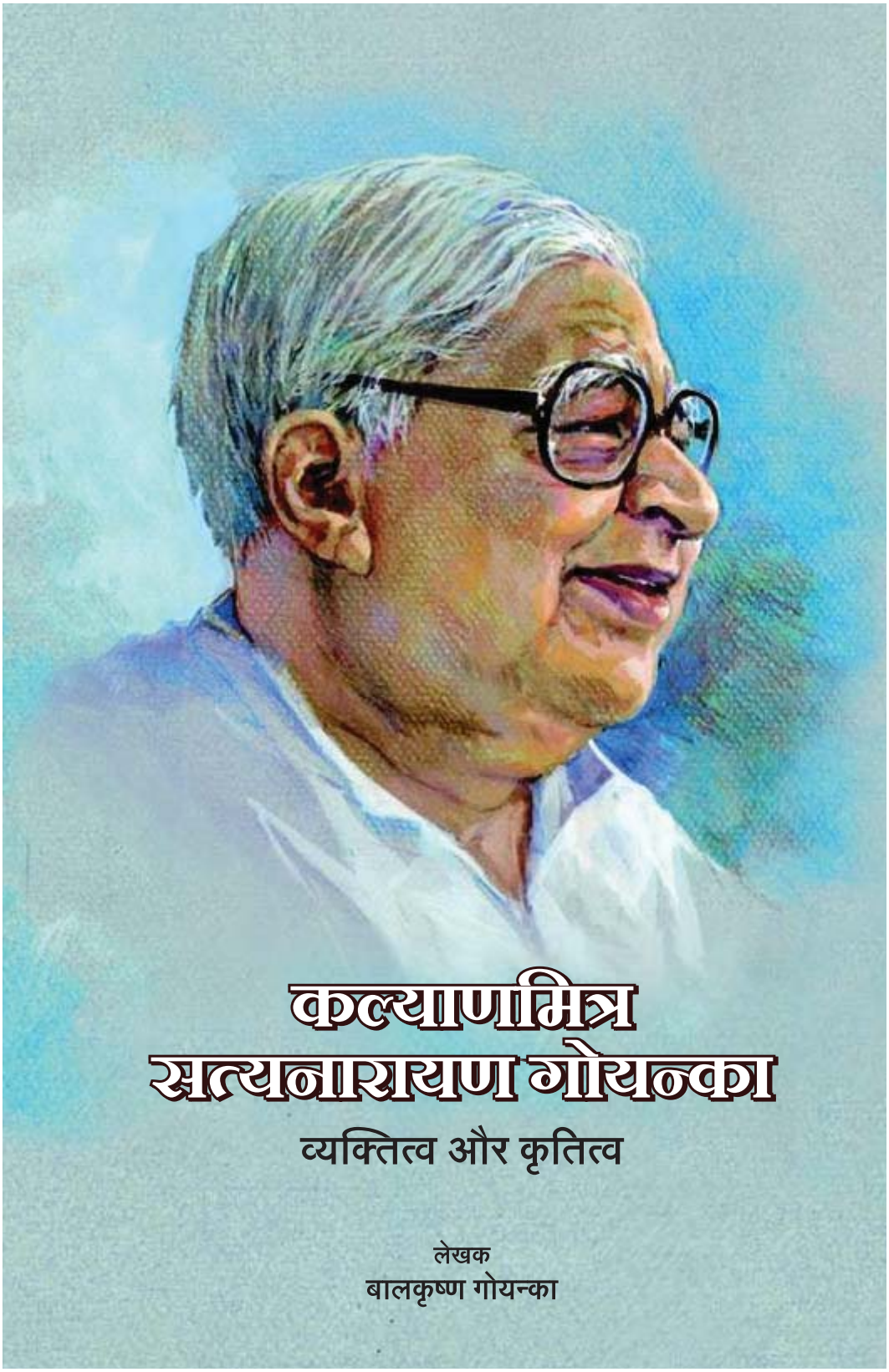

कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का

व्यक्तित्व और कृतित्व

लेखक
बालकृष्ण गोयन्का

कल्याणमित्र
सत्यनारायण गोयन्का

व्यक्तित्व और कृतित्व

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

विषय-सूची

भूमिका ७

विश्व विपश्यनाचार्य कल्याणमित्र श्री सत्यनारायण गोयन्का ११

व्यापक रुचि के धनी १२
पंडित नेहरू से भेंट १४
तिपिटक का अनुवाद १५
दहेजप्रथा का विरोध १७
समाजसेवा में अग्रणी १९
मानसिक तनाव बढ़ा २०
विपश्यना ने नया जीवन दिया २०

भारत में विपश्यनागमन २३

विभिन्न क्षेत्रों से शिविरों की मांग २३
विनोवाजी से भेंट : सेवाग्राम में शिविर २५
शिविरों का तांता लग गया २५
विपश्यना सभी संप्रदायों द्वारा स्वीकृत हुई २६

विपश्यना के स्थाई केंद्र बने २८

साधकों की बढ़ती संख्या ३१
भारत में प्रथम विपश्यना पगोडा ३२

विपश्यना विदेश पहुँची ३३

विपश्यना की सार्वभौमिकता ३५

विपश्यना विकास के विभिन्न आयाम ३७

विपश्यना विशोधन विन्यास की स्थापना ३७
विपश्यना पत्रिका ३७

विपश्यना वेबसाइट ३८
विपश्यना साहित्य ३८
सयाजी ऊ बा खिन विपश्यना ग्राम ३८
पावन स्मारक : विशाल पगोडा ३९

विपश्यना द्वारा समाज कल्याण ४०

जेलों में तथा पुलिस अकादमी में विपश्यना शिविर एवं केंद्र ४०
पुलिस अकादमी में विपश्यना प्रशिक्षण और स्थाई केंद्र ४२
शासन में विपश्यना ४३
शिक्षा के क्षेत्र में विपश्यना ४३
अंध-बधिर और कुष्ठरोगियों में विपश्यना ४४
बेघर बच्चे ४५
बाल शिविर ४५
असहाय वृद्धों के लिए विपश्यना ४५

विपश्यना के कर्णधार ४६

विपश्यना के सहायक आचार्य ४९

विपश्यना के प्रत्यक्ष लाभ ५२

मनोविकारों पर विजय ५३
व्यसन-विमुक्ति में अग्रणी विपश्यना ५५

कांची के शंकराचार्य से ऐतिहासिक समझौता ५६

पड़ोसी बुद्धानुयायी देशों से सुदृढ़ मैत्री संबंध ५७
उपरोक्त समझौते का विस्तार ५८

धर्मचारिकाएं ५९

धर्मदेश म्यंमा की तीर्थ-यात्रा ५९
विश्व आर्थिक मंच पर विपश्यना ६१
संयुक्त राष्ट्र में विपश्यना का स्वागत ६५
उत्तर भारत की धर्मचारिका ६७
पश्चिमी देशों की धर्मचारिका ६८
दक्षिण भारत एवं नागपुर की धर्मचारिका ७१

विपश्यनामयी तीर्थ-यात्रा २००१ : (दिनांक १७-२ से ०२-०३-२००१) ७८
नेपाल, थाईलैंड एवं म्यंमा यात्रा ९७
एक और लंबी धर्मचारिका १०२

प्रबल प्रभावी जीवनचर्या **१०३**

प्रभूत मान-सम्मान १०३
असाधारण व्यक्तित्व और कृतित्व १०३
जीवनसंगिनी का सहयोग १०५
अलौकिक प्रतिभा के धनी १०६
अनुपम अनासक्ति १०७
दुर्लभ सत्पुरुष १०९
आशीर्वाद और प्रणाम ११०

विपश्यना की तपोभूमियां **१११**

१. विपश्यना साहित्य **११५**

२. विपश्यना साधना के केंद्र **११८**

भूमिका

श्री सत्यनारायण गोयन्का मेरा अनुज भ्राता है। परंतु चूंकि मैं श्रद्धेय गुरुदेव ऊ बा खिन के अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना केंद्र, यांगों, म्यंमा (बर्मा) में जाकर उनके पास विपश्यना का पहला शिविर २३-१०-१९६४ को और दूसरा ७-१२-१९६६ को लिया, इस संबंध से वह मेरा गुरुभाई हो गया। उसके बर्मा से भारत आने पर उससे मैंने पहला शिविर २०-९-८३ को मद्रास की 'श्रीरामा कल्याण मंडपम्' में सम्मिलित होकर लिया और फिर एक शिविर हैद्राबाद केंद्र में लिया। फिर तो इगतपुरी में १९८६ से १९९९ तक सतिपट्ठान, दस दिवसीय, २० दिवसीय एवं ३० दिवसीय व अनेकों गंभीर शिविरों में भाग लिया। इस संबंध से अब वे मेरे गुरुदेव हैं।

मेरी बहुत इच्छा थी कि गुरुदेव अपनी आत्मकथा लिखें। मेरे बहुत आग्रह करने पर उन्होंने कहा "प्हाऊ! विधिवत आत्मकथा लिखने के लिए मैं समय कहां से लाऊं? फिर भी किसी-न-किसी प्रसंगवश यदा-कदा आत्म-कथन लिखता ही हूं। अधिक लिखूं तो उसमें आत्म-प्रशंसा की बू आ जाने का खतरा भी तो है।" उन्होंने मैट्रीकुलेशन तक की शिक्षा "खालसा हाई स्कूल" में पायी थी। पंजाब में बड़े भाई को "प्राह" कहते हैं। मुझे इस शब्द से संबोधित करते थे, जो जल्दी ही प्यार से 'प्हाऊ' हो गया और आज तक वे मुझे इसी नाम से पुकारते हैं। उनकी यह बात सुन कर मेरे मन में प्रेरणा जगी और मैंने संकल्प किया कि यह कार्य मैं ही क्यों न पूर्ण करूं!

ब्रह्मदेश में मेरा जन्म हुआ और मैंने जीवन के २४ वर्ष वहीं गुजारे। भगवान गौतम बुद्ध वहां के निवासियों के ईष्टदेव हैं। उनके अनेकों विशाल मंदिर व पगोडा हैं। उनमें बुद्ध की बहुत ही सुंदर, चित्ताकर्षक, सजीव-सी लगने वाली मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। मूर्तियां कहीं पत्थर की, कहीं संगमरमर की, कहीं पीतल की तो कहीं स्वर्ण मंडित हैं। उन्हें वे बहुत ही श्रद्धा, निष्ठा व भक्ति भाव से नमन करते हैं। वहां के छोटे-से-छोटे गाँव में भी भगवान गौतम बुद्ध का एक मंदिर (पडोगा) अवश्य है। ऐसे ही थाईलैंड, कंबोडिया,

ताईवान, जापान आदि दक्षिण पूर्वी देशों में भी बहुत विशाल और बहुत ही आकर्षक मन्दिरों (पडोगा) में भगवान गौतम बुद्ध की स्वर्ण, पन्ने, माणिक आदि की बनी मूर्तियां दर्शनीय हैं। ब्रह्मदेश में रहते हुए मैं इनके प्रमुख मंदिरों में जाते रहता था। वहां के निवासियों में भगवान गौतम बुद्ध के प्रति असीम श्रद्धा भक्ति देख कर मैं भावविभोर हो जाता था। भारत में अनेकों मतावलंबियों के अपने-अपने ईष्टदेव और उनके अलग-अलग मंदिर हैं। परंतु इन दक्षिण पूर्वी एशियायी देशों में हमारे देश के एक महान पुरुष केवल भगवान गौतम बुद्ध को ही अपना ईष्टदेव मान कर अत्यंत श्रद्धा और भक्तिभाव से नमन करते हैं, उनकी वाणी का अपनी भाषा में पाठ करते हैं। इस प्रकार किशोर अवस्था से ही भगवान गौतम बुद्ध के प्रति मेरी श्रद्धा जागी। उनके मंदिर में जाता तो उनकी भव्य सुंदर मूर्ति को एकटक देखते ही रहता। परंतु उनके जीवन के बारे में, उनकी धर्मवाणी और उनकी बतायी ध्यान-विधि के बारे में बिल्कुल ज्ञान नहीं था। भारत आकर बस जाने के कुछ वर्षों बाद भाई सत्यनारायण से उनकी बतायी "ध्यान साधना विधि" और उससे मिलने वाले लाभ के बारे में सुना और बर्मा जाकर विपश्यना के महान आचार्य गुरुदेव ऊ बा खिन के निर्देशन में इस ध्यान साधना का अभ्यास किया और बाद में भाई सत्यनारायण से भगवान गौतम बुद्ध के बारे में कुछ अधिक जानकारी हुई तो उनके प्रति और अधिक श्रद्धा जागी।

"विपश्यना" साधना भारत की अत्यंत पुरातन साधना पद्धति है। इसे भगवान गौतम बुद्ध ने पुनः अनुसंधान कर, लोक कल्याण के लिए सर्व सुलभ बनाया था। यहां यह विद्या पुनः लुप्त हो गई, परंतु ब्रह्मदेश ने इस ध्यान विधि को गुरु-शिष्य परंपरा से शुद्ध रूप में संभाल कर रखा, जिसे वहां से सन १९६९ में गुरुदेव श्री सत्यनारायण गोयन्का अपने देश में ले आये और इसका प्रचार किया। भारत में ही नहीं, सारे विश्व में स्वयं जाकर वहां के निवासियों को सुख और शांतिपूर्वक जीवन जीने की इस कला की विधि से प्रशिक्षित किया। वस्तुतः इस साधना का मुख्य लक्ष्य चित्त को शुद्ध करना है। इसके माध्यम से साधक अपने भीतर संग्रहीत दैनिक जीवन के तनावों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जीवन में आने वाली अप्रिय हालातों को हँस कर झेलने की क्षमता पा लेता है। पूज्य गुरुदेव ऊ बा खिन के अत्यंत

मैत्रीपूर्ण निर्देशन में और भाई सत्यनारायण के पूर्ण सहयोग से रंगून के विपश्यना केंद्र में इस साधना विधि द्वारा तपने का मुझे सौभाग्य मिला और इस भगवती विद्या से मैंने आंतरिक शांति का अनुभव किया। इसी से यह समझ में आया कि धर्म एक आदर्श जीवन शैली है, जीवन जीने की कला है। विपश्यना साधना स्वदर्शन की, आत्म-दर्शन की साधना है, चरित्र-निर्माण की साधना है। इसका संबंध किसी प्रकार की रूढ़ि, कर्मकांड और संप्रदाय से नहीं है। मैं बार-बार भगवान शब्द का उल्लेख करता हूं। प्राचीन युग में "भगवान उसे कहते थे, जिन्होंने ध्यान की उच्च अवस्था में पहुँच कर अपने राग, द्वेष, मोह, लोभ, कामवासना के विकारों को भग्न कर दिया हो।" इस विद्या के द्वारा हम भी ऐसा कर सकते हैं। इसी उद्देश्य से यह जीवनी लिखने का प्रयास किया। मुझे विश्वास है कि यह प्रभावशाली जीवनी अनेकों को प्रेरणा देगी और अधिकाधिक लोग विपश्यना को अपना कर अपना मंगल तो साधेंगे ही, अन्य अनेकों के मंगल में भी सहायक बन सकेंगे।

सब का मंगल हो!

विनीत,

(बालकृष्ण गोयन्का)